

पुस्तक मिलनेका पता—

प्रतापमल मूलचन्द,

पो० डूंगरगढ़,

जि० बीकानेर ।

मुद्रक

यात्रू रामसहाय वर्मा

“चित्रगुप्त प्रेस”

१४७ काटन रोड,

कलकत्ता ।

विषय	पृष्ठ
उपदेशी स्तवन	२४
उपदेशी सिद्धांत	२६
उपदेशी पद	३०
हित शिक्षा की सिद्धांत	३१
उपदेशी चतुर्कला	३२
सप्त व्यसन निषेध स्तवन	३३
वेगगी उपदेशी सिद्धांत	३४
श्री आप्तदेवजी की हानरीया	३५
देशी नाटक की चालमे (हानरीया की हान)	३७
नेमजीकी जान निम्नमे	३८
पायचन्द मरजी कृत जाव दया की हान	४१
सुगण बुद्धायाकी हान	४४
श्री कदा चर्चाया की सचये	
चावन सचयामे मे	४६
नेमनाथ चर्चा	६८
उपदेशी सचयामे	७१

सोमल ब्राह्मण करो तुम चर्चा, दुधारा प्रक्ष
करायो; जिणनें मुक्ति इण भव दीधी, श्री
पंचम अंग दिखायो ॥ ना० ॥ ५ ॥ अर्जुन
माली पट मासां ताई; सात मनुष्य नित घायो
जिणनें मुक्ति दीवी दिन भरमें, सकल ही पाप
गमायो ॥ ना० ॥ ६ ॥ श्री वीर प्रभूसें अरज
करत हूं; मुजनें किम विसरायो; नहीं अधि-
काई काष्ट जल तारे, अधिकाई पाहण तरायो
॥ ना० ॥ ७ ॥ तुम अपकार किया बहुतेरा
सहुना काज सरायो; मुनि राम कहै मुज ता-
रन विरियां, किम आलस दरसायो ॥ ना० ॥ ८ ॥

॥ इति कर्मोंकी लावणी समाप्तम् ॥



अथ श्रीसीमंधर स्वामीजीका स्तवन लिख्यते ।



(मैं सुणी कन्तकी वात, नार एक घाली
घरमाई जी; धण छोड चलयौ परदेश
पियो जा वस्यौ मंमाई जी ॥ एदेशो)

मैंने तज दीये घरवार, सुनो मेरे अन्तर-
जामीजी ; प्रभु दूर वसे परदेश, श्रीसीमंधर
स्वामीजी ॥ टेर ॥ मैं तड़फत हूँ दिन रैन, मोयकूँ
कर्म सन्तावेजी ; मैं देउं दिल्लकूँ ज्ञान, जवी
समता घर आवेजी ; मेरे प्रभू वसे परदेश,
सदा जहां केवल पावेजी ; प्रभू वसे समुद्रां पार
मिलन कैसे बन जावेजी ; मेरे धीचमें पड़ रहे
पहाड़, मोय कुन पार लंघावेजी ; नहीं दीवो
विधाता पंख, देवत पिण नाहीं पुगावेजी ; मेरे
लग रही दिलके मांय, दर्श कहो कौन करावेजी ;

न थाई जी ; मुनी रामचन्द्रकी जोड़, कला
सबके मन भाई जी ; में सुनी शास्त्रकी बात,
गुरु एक मिल गये नामी जो : प्रभु दूर वसै
परदेश ; श्री सीमंधर स्वामी जी ॥ ४ ॥

॥ इति धी सीमंधर स्वामीजी का स्तवन समाप्तम् ॥

—:ॐ:—

॥ अथ गुरु उपदेशी लिख्यते ॥

—:ॐ:—

(ख्याली आर्यो मुलतानसें ॥ ए देशी)

पार न पायो गुरु जानको, भलो बनायो
मारग जैनको ॥ पार० ॥ टेर ॥ दान सुपात्र
मुनिकुं दीजो, पायो शालिभद्र फल दान को
॥ पा० ॥ १ ॥ शील रख जतन करी रखो,
ज्युं सुधरे धारो मानखो ॥ पा० ॥ २ ॥ नप
चिना नहीं मान्न मिलत हैं, नष्ट करे कर्म

वित्तान को ॥ पा० ॥ ३ ॥ देखो भाव शिरो-
मण शुद्ध परणामे, मरु देव्या भरत राजान को
॥ पा० ॥ ४ ॥ जीव अजीव पुन्य पाप वतायो,
कीयो आश्रय संवर पिछानको ॥ पा० ॥ ५ ॥
निर्जरा बंध क्रिय मोख दिखायो, शासन
वतायो वर्धमानको ॥ पा० ॥ ६ ॥ रामचन्द्र
कहे सतगुरु सच्चा, नाश करयो रे अज्ञान को
॥ पा० ॥ ७ ॥

॥ इति गुरु उपदेशी समाप्तम् ॥

॥ अथ उपदेशी लावणी लिख्यते ॥

(मेरोजी पृथ्व गुप्तायरो ॥ ए देशो)

तेरो जी कृष्ण संसारमें, ओ तो मेरो मेरो
एक न कोय ज्ञाना जिवड़ा, तू पिण नहीं छे
केहना, तू नो अन्दर ज्ञानसुं जाय ॥ इ० ॥ ते० ॥

एतो उल्टा धर्म लजावे, जांने निलोभी कुण
गावे ॥ म्हे० ॥ ४ ॥ केई तन ऊपर ममता धर
जी २; एतो खाय खाय मांस वधावे, जांने
तपस्या दाय न आवे, आवर लोभी गणिया
जावे ॥ म्हे० ॥ ५ ॥ केई कथन करावे
केई ढंगसूं जी २; हे कोई राजाजीकूं लावे, हे
कोई दिवानकूं बुलवावे, धनवंत देख देख
घतलावे ॥ म्हे० ॥ ६ ॥ केई महिमा वांछे आपणी
जी २; निज महिमासूं फूल जावे, जारे तत्व
हाथ नहीं आवे, मुनि रामचन्द्र दरसावे
॥ म्हे० ॥ ७ ॥

॥ इति लोभ गर्भित हितोपदेश ॥



है सो लोजियेजो, कांड़ कहणा है सो केह
॥ अ० ॥ ५ ॥ लाय लगो चहुं फेर सुं जी,
कांड़ मिल रही भालो भाल, मुनिराम कहै
सहु काडजो जी, कांड़ इण घरमें बहु माल
॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ इति उपदेशी पद समाप्तम् ॥

—:६:—

॥ अथ उपदेशी फटको लिख्यते ॥



(मत करना परतीत रांडकी मारा सेर,
देगई टारा ए देशी)

चले न कितका जोर मीजाजी, होनहार
होवे, मीजाजी होनहार होवे; जोशी सिद्ध
मीये अर अवधू, खड़ा खड़ा जोवे ॥ टेर ॥ जो
जोशी जोतिपकूं वरने, वात सच्ची दीते उनकूं

॥ भला वा० ॥ राजा प्रजा पाये लग्गे, ईश्वर ही
जाने जिनकूं; तेजो मंदी होवे रे मालम, क्यूं
जाचे औरनकूं; भला क्यूं० ॥ अंक फर्क जोशी
कूं दीसे, छिनमें मार लेवे धनकूं; सब कोइ
जोशी फैल करत हे, होतवनेको कुण धोवे
॥ भला हो० ॥ च० ॥ १ ॥ राख लगाये जटा
बंधाये, क्या सिद्धो पाते हैं बाबू, भला क्या०
गंगा पर हगडार ठिकाना, हींग लाज ग्हे आवू;
जड़ी घुंटीका ग्यंवे कुनका, तड़ाका मारे,
माजाराजा ॥ न० ॥ भोलेकां भरमावे विग्धा,
सब ही धनारं, साच किर्माके पास नहीं हे,
जन्म वृथा खावें ॥ भला ज० ॥ च० ॥ २ ॥
मुमनमान परवान ही देखा, जादूगर रमली,
॥ भला जा० ॥ डोंरें गंडे भांडे फुंके, घान
मिलाने हैं अगली; देख देखनं सबही देखा,
पुग्यासां जंगली ॥ भला पु० ॥ इल्म किर्माके
पास न मद्या, टुगवाजा मगली, मिमिया

हिमिया रिमिया बोले, किमियाकूं रोवे ॥ भला
 कि० ॥ च० ॥ ३ ॥ जंत्र मंत्र और टांणे टूणे,
 उच्चाटन सारे, भला उ० ॥ जो किसीका किस
 पर चलो, चाहे सो मारे, कर्म प्रमाणे सुख दुख
 भुगते समझो दिल प्यारे ॥ भला स० ॥
 नास्ति नहींको विरला होगा, होते नहीं ज्हारे,
 सच्चा इल्मी उसकुं समझो, सुकृत फल वोवे
 ॥ भला सु० ॥ च० ॥ ४ ॥ साध संत अर
 अवधू नगगे, मौनी अर मुल्ला, ॥ भला मौ० ॥
 साच बात तो कोइयन पाई, मारत है गल्लां;
 अंदर छोड़ी बाहिर ढुंढे, किम पाते रस्ता
 ॥ भला कि० ॥ अद्धि सिद्धि सब मांहि विराजे,
 क्यूं इत उत धस्ता, मुनिराम कहै वो इल्मी
 सच्चा, निज मठनें धोवे ॥ भला नि० ॥ च० ॥ ५ ॥

॥ इति उपदेशी फटको समाप्तम् ॥

क्या तुम मद्य खाते, हां खाते मदिरा सैंत;
 क्या मद्य भी पीते बावो घोले, पीवां वेश्या
 समेत हो ॥ सं० ॥ ६ ॥ क्या वेश्या भी सेते
 घोले जोगी, अरि शिर पग दे जाते; कुंन तुज
 वैरी वो मुज वैरी मोंत भदेहां राते हो ॥ सं०
 ॥ ७ ॥ क्या चोरीभी करते दीसो बावू. हां
 घृत हेत करां चोरी; सुणने दिलमें राजा चम-
 क्यो ए गत होसी मोरी हो ॥ सं० ॥ ८ ॥ राजा
 घोले सुण बाबाजी, हूं जुवारीमें मोटो; किसी
 तणोंमें कयो न मान्यो, जाणयो व्यसन ए
 ओटो हो ॥ सं० ॥ ९ ॥ सुणीये बावू कहे इम
 जोगी, जो तूं जुवा रमसी; चोरी नारीपर
 मदिरा मांस, वेश्या शिकार तूं भमसी हो ॥
 सं० ॥ १० ॥ राजा बोले सुणो बाबाजी, भुल
 चुक नहीं रमसुं; मुनिराम कहै संग उत्तम
 करीये, सीख देवो उत्तसुं हो ॥ सं० ॥ ११ ॥

॥ इति जुवा निषेध लावणी समाप्तम् ॥

उपजे, देखो कमका जोर हो ॥ सं० ॥ ५ ॥
 कलकल एक रात्री लग रहे, पंच रात्री बुद्ध-
 बुद्ध रूप : पञ्च करीने ईंडो होवे, इम बोले
 जिन भूप हो ॥ सं० ॥ ६ ॥ शिरोङ्कुर एक
 मास करी होवे, मास दोय उर घाट ; तीन
 माससे उदर वनत है, चतु मासे कर फाट
 हो ॥ सं० ॥ ७ ॥ पंच मास करीने अंगुली
 प्रगटे, रोम दृष्टो पट मास : सर्वावयव वहे
 मास सातमें, जिनवर कीयो प्रकाश हो ॥
 सं० ॥ ८ ॥ चरण ऊर्ध्व अरु मस्तक नीचो,
 चर्म पक्षी परे टिरियो ; नव दक्ष मासे वायु
 प्रकोपे, गर्भ थकी नीसरीयो हो ॥ सं० ॥ ९ ॥
 नव द्वार करीने अशुचि वहे नित, छे मल
 मुत्रकी खान ; मुनि राम कहै इन काया
 सेती, सदा करो धन ध्यान हो ॥ सं० ॥ १० ॥

॥ इति उपदेशी स्तवन समाप्तम् ॥

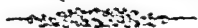
एक कोड़ अस्सी लाख ; महाभारत आगे
हुवो सरे, छै सूत्रनी साख रे ॥ मू० ॥ ३ ॥
जादव कुलमें आयने सरे, कमला कीधो
वास ; पुरी द्वारका सुर करो सरे, सब सोवन
घर वास ; एक दिन ऐसो आवियो- सरे,
हुवो जादव केरो नासरे ; ॥ मु० ॥ ४ ॥ राय
प्रदेशीरे होतो सरे, सूरी कंता नार ; इष्ट
कांत वाल्ही घणी सरे, सूत्रमें अधिकार ;
निज स्वारथ विन पापणी सरे, मारचो निज
भरतार रे ॥ मू० ॥ ५ ॥ जुटुल श्रावकने हुंती
सरे, दइता तीसनें दोय ; अग्नि माहीं प्रजा-
लीयो सरे, दया न आणी कोय ; माठी
गतनी पाहुणी सरे, गई जमारो खोयर ॥ मू०
॥ ६ ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणी सरे, हुंती चलणी
मात, व्यभिचारण चक गइ सरे, दीर्घ रायके
साथ, घात विचारी पुत्रनी सरे, छै ए बहुली
वातरे ॥ मू० ॥ ७ ॥ सहस विद्या त्रिखंड धणी

त्रिया सरे, जोवो हीये विचार रे ॥ मू० ॥ १२ ॥
 जर जोरूके कारणे सरे, तुटे जुनो प्यार ; जे
 नर जाणे आपणी सरे, ते नर मूढ गिवांर ;
 त्यागन कर संग्रह करे सरे, तिणने छे धिकार :
 रे ॥ मू० ॥ १३ ॥ कनक कामणी छोड़नें सरे,
 पाले शुद्ध आचार ; सुपनामें वंछे नहीं सरे, ते
 कहिये अणगार : राम कहै मुनिवर भणी सरे,
 वंदो वारंवार रे ॥ मू० ॥ १४ ॥ उगणीसे अष्टा-
 दसे सरे, जोधपुर सेखे काल, स्वामी वृद्धिचन्द
 प्रसादसुं सरे, जुगतसुं जोड़ी ढाल, सत गुरुनी
 किरपा थकी सरे, वरते मंगल माल रे
 ॥ मू० ॥ १५ ॥

॥ इति उपदेशी सिङ्गाय समाप्तम् ॥



॥ अथ हितशिक्षाकी सज्जाय लिख्यते ॥



(एक मुनिवर देख्या वनमें ॥ ए देशी)

आखर तेरे काम नहीं आइ, तूं जोवेनी
 आंख भुकाइ ॥ आ० ॥ टेर ॥ चुन चुन मटिया
 महल चुनाया, ऊंडी नींव लगाइ, आ० ॥ १ ॥
 नारी रूपा अप्सरा सरीखी, जोड़ी मिली मन
 चाइ ॥ आ० ॥ २ ॥ सोना रूपा हीरा मोती,
 म्होरांकी थेली चुनाइ ॥ आ० ॥ ३ ॥ मात
 पिता भ्राता सुत भगि, ज्ञाती न्यातीने
 मित्राइ ॥ आ० ॥ ४ ॥ वसन भूषण वाहन
 बहुतेरे, और सहु ठकुराइ ॥ आ० ॥ ५ ॥
 मंत्र यंत्र ज्योतिषने वैद्यक, इलम और पंडिताइ
 ॥ आ० ॥ ६ ॥ राज काज हाथीने घोड़े, पल-
 टण और सिपाइ ॥ आ० ॥ ७ ॥ दान शील
 तप भावना भावो, ए छे साची कमाइ ॥ आ०
 ॥ ८ ॥ धर्म ध्यान कर पर भव साधो, जद लेखे

॥ अथ सप्त व्यसन निषेध स्तवन ॥

(देशी ख्यालनी)

संसारी लोको सात व्यसन छोड़ो भावसुं
॥ सं० ॥ टेर ॥ जुवा खेलण मांस मद्य और,
वेश्या व्यसन शिकार; चौरी पर रमणीको
रमवो, सातूं व्यसन निवार हो ॥ सं० ॥ १ ॥
जूवा खेलीया पांडवा सरे, मंस भखीयो वक-
राय; मदिरा पोवी जादवां सरे, जड्यां मूलसैं
जाय हो ॥ सं० ॥ २ ॥ चारुदत्त वेश्याने सेवी,
ब्रह्मदत्त आखेट; सत्यघोष पर धनके करण,
पहुंतो नरकां थेट हो ॥ सं० ॥ ३ ॥ रावण
राजा बड़ो अभिमानी, तीन खंडको स्वामी,
रामचन्द्रकी सीता हरतां, भयो नरको गामी हो
॥ सं० ॥ ४ ॥ सात व्यसन ए छोड़दो सरे, है
जीवन दुखकार; रामचन्द्रकी यही सीख है,
सातूं व्यसन निवार हो ॥ सं० ॥ ५ ॥

॥ इति सप्त व्यसन निषेध स्तवन समाप्तम् ॥

डेल्यां थारी बहन भाणजी, सेरयां थारी माय
 रे । दारामतीमें कोइ न चाले, कोइन राखण
 हार रे ॥ मन० ॥ ६ ॥ माय तेरी सदा भूरे,
 घेन धार तिवार रे । प्रीया तेरी सदा भूरे,
 पण कोइ न राखण हार रे ॥ मन० ॥ ७ ॥
 हाड जले ज्युं लाकड़ी, केश जले ज्युं घास रे ।
 कंवनसी देह जले पण कोइ न आवे पास रे ॥
 मन० ॥ ८ ॥

॥ इति देरागी चपदेरी सप्तमाय समानम् ॥

—:—

॥ श्री ऋषभदेवजीरो हालरीयो ॥

—:—

मा मोरा देवी गावेरे हालरीयो. भुलेरे
 हमारो ऋषभजी पालणो पतरीए ॥ टंर ॥ ग्ल
 जड़त लड़ा लुम्बा रण कंता. इन्द्र सुधर्मा इणा
 शगे धरीयो ॥ मा० ॥ १ ॥ भुलने भुलावे

चचाके—

च०

चरचा करीजे चोखी चातुरसु ज्ञान केरी,
मूर्खसु चरचा कर्यां पराल सो कूटे हे ।

चरना करी परदेशी चरचा करी हस्केशी,
नरना कयांसु गजा ध्रेणिक सुलटे हे ।

चरना करी हे चोखी संजति श्वभाखीजी,
भग्नप्रात सुत शुकुं कमांसुं शूटं हे ।

च'व जालचद कहें चरनासुं कम दहें,
भुग'नम मुख वहें थाटीं कम तुटें हे ॥ ६ ॥

१३४

श०

१३४ अटल मांझी आयु श्रंजन हं मूढ नेमं,
१३५ गदा भागनमें पाछे पिछतायगां ।

१३६ गजदक जावनमें शुक गदा,

१३७ दक माद शक्या दुर्गतिमें जायगां ।

१३८ कल कल शूट काया शूती शूती,

१३९ जाय माद मुदगस्य म्वायगां ।

णाणाके—

ण०

णाणाविध भेख धरे णाणाविध कर्म करे,
 णाणाविध पेट भरे मिटे नहीं मरणो ।
 णाणाविध गुरु गिणे णाणाविध देव भणे,
 णाणाविध जीव हणे धर्म नहीं शरणो ।
 णाणाविध धोक देवे णाणाविध धूप खेवे,
 णाणाविध खण लेवे नहीं हुवे उदरणो ।
 ऋपि लालचंद कहे देव अरिहन्त लहे,
 गुरु ही निग्रन्थ मांहे दया धर्म करणो ॥१५॥

तताके—

त०

तरण तारण देवताकी नित कीजे सेव,
 तेही अरिहंत कर्म वैरी जाने हणिया ।
 तेही गुरु तरण तारण त्यागीया सावज्ज जोग,
 भोग सहु छांड दिया सोई गुरु गिणीया ।
 तत्तसार तेही धर्म जाणे दया तणा मर्म,
 तेसुं टुटे आठु कर्म शिवसुख मणीया ।

नमो हय नमो गय नमो दानी नमो ज्ञानो,
 नारेलने केसा जल नमो फल भारी है ।
 नमो पुत्र पुण्यवान नमो बहु शोक्तवान,
 नमो शिष्य विनयवान सोही अवतारी है ।
 ऋषि लालचंद्र कहे नम्या जग येल लहे,
 सोने से ही मोंगो मोल नम्या अधिकारी है ॥ २० ॥

पवाकें.—

५०

पापहु अटारह हिंसा भूट चोरी मेथुन,
 परिग्रह क्रांथ मान माया लोभ जाणिये ।
 पापमूल गगदं व कलहने अभ्याधान,
 आल पेशून परपरीयाद नहो भलाये ।
 पाप मांहे आणे गति अरति धर्म मांहे,
 माया मांयो मिथ्या दर्शण सज पही जाणिये ।
 ऋषि लालचंद्र कहे परम पद पाया लेवे,
 मुगति अनन्त मुग्य मिडका यन्त्राणीये ॥ २१ ॥

॥ नेमनाथ चरित्र ॥

॥ सिलोको ॥

सद्गुरु कृपा करजो जी हमसें, नित नित
पाये लागुं जी तमसे; कैसें सिलोको नेमजी
केगे, सुणताई होवे काज भलेरो; नगरी
द्वारामती कृष्णा बसाई, जादवां केरी चढ़ती
पुन्याई; सोनेकी नगरी अद्भुत दोपे, क्षिण में
तो बेंगी जादव जापें ॥१॥ एक दिवस श्रीनेम-
कुमारो, आये शम्भू शालामें साथीड़ा लारो; शंख
वजवायो धनुष्य चढ़ाया, सुणताई शब्द कृष्ण
धरगच्छ : ओ गज लेवे जा नारी परणाउं, परणे
नही परणे निश्चै करवाउं; गजी मतीनी कीधी
मगाई, अपने कोड़स जान बणाई ॥२॥ हाथी
पर शोभे नेम जिएढो, अधिका तो शोभे
नारंगमें चंडो; नरनारंगका मिलाया बहु वृन्दो,
घरघरमें होवे, अधिक अनन्दो; पशु बांसू
बाडा टाटा जी भगिया, छोड़ी पशुवानें । उप-



हीरदामें धार ॥ वं० ॥ ११ ॥ संमत अठारे
 तयालीसे जाण, पुज जेमलजीरी अमृत वाण ।
 चोमासे स्तवन कीयो पिपाड ॥ वं० ॥ १२ ॥
 असाढ़ सुद, सातमरे दीन, गणधरजीने गांयो
 इक मन ॥ आसकरणजी भणें अणगार ॥
 वं० ॥ १३ ॥

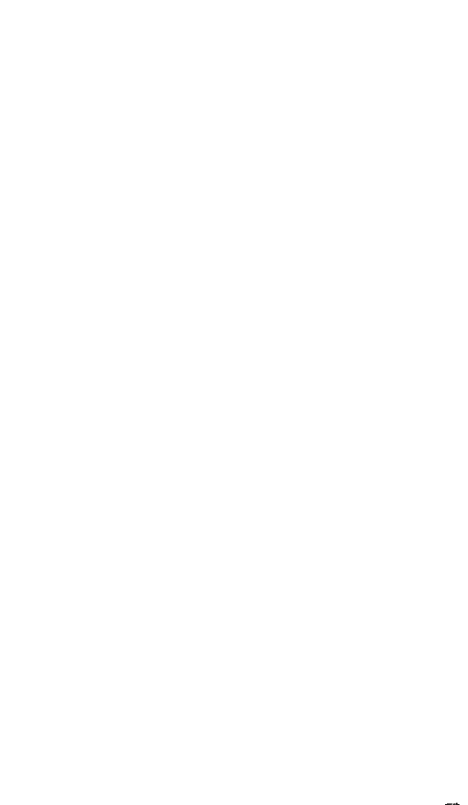
॥ इति इग्यारे गणधारको स्तवन समाप्तम् ॥

—:❀:—

गोरल ईसरजी कवे तो हंसकर
 बोलना हे ॥ एदेशी ॥



म्हे तो चौबीसे जिनवर बांदसांजी, जिन
 साथे प्रीति सांधसांजी ॥ टेर ॥ पेला अपभ
 अजित तीजा संभवार्जी; चौथा अभिनंदन
 सुखकारी, पंचम सुमति सदा हितकारी, छठा
 पद्मप्रेम बलिहारी ॥ म्हे० ॥ १ ॥ सप्तम सुपास



ज्ञान प्रकाश दीखाया । नंद कहे चरणां में
नमं, श्रीशासन नायक मोक्ष सिधाया ॥ ६ ॥

॥ इति सवैया समाप्तम् ॥



६ कारण हींसा करे ।



- १ जीतवार अर्थे हींसा करे,
- २ प्रशंसारे अर्थे हींसा करे,
- ३ मानरे अर्थे हींसा करे,
- ४ पुजाणरे अर्थे हींसा करे,
- ५ जनम-मरण-मुकाण-रे अर्थे हींसा करे,
- ६ दुख मीटाणरे अर्थे हींसा करे ।

—:॥:—

दं मित्र ।

- १ जन्मको मित्र माता पीता,
- २ घरमें मित्र धन और स्त्री,
- ३ देह रो मित्र अन्न,
- ४ आत्मा रो मित्र कर्म,
- ५ रोग रो मित्र औषधि,
- ६ संप्राम में मित्र भुजा,
- ७ परदेश में मित्र विद्या,
- ८ अन्तकालमें मित्र श्रीजिनेश्वर देवको धर्म ।

—❀—

६ ठिकाना रोग उपजे ।

—॥॥॥—

- १ घणो खावे तो रोग उपजे,
- २ अर्जोण उपर म्खावे तो रोग उपजे,
- ३ घणु सोवे तो रोग उपजे,
- ४ घणु जागे तो रोग उपजे,

कन्या लीनो साधपणो, अठारे लेप भणीने
 आई ॥ ब्राह्मी० ॥ १० ॥ सहेंस साठनी गिणती
 लाया आदेश्वरजी री हुई चेल्या, बहु बलजीने
 समझा वण मेल्या, एतो आदेश्वरजी सिखाई,
 सतियां मुगत मार्ग में सिधाई ॥ ब्राह्मी० ॥ ११ ॥

॥ इति ब्राह्मी सुन्दरी स्तवन समाप्तम् ॥



॥ अथ साधुवन्दना प्रारम्भ ॥



॥ ढाल चउपईनी तथा सिंधनी ए देशी ॥

प्रथम नमुं शिवसुखके स्वामी, नाम निरं-
 जन ज्योति प्रकाशी । जनम मरण दुःख
 नाहीं निकासी, अजर अमरपद वै अवि-

सांव कुमरको दोय बलाणी । अवर अनेकसुं
यादव नारी, मुगति गई बहु राजकुमारी
॥ २० ॥ धावचा सूकदेव सेलगराया, धर्मरुचि
धर्मघोष कहाया । पंडरीक चारित चित्तलाया,
मेघकुमार मेरे मन भाया ॥ २१ ॥ सेणिक
सुत तेरह वयरागी, भादाके सुत नव वड़भागी ।
अभयकुमार दसे सुमनाजी, धन धन तपसी
साधु धनाजी ॥ २२ ॥ तेरह दस तिरीया तन
नारी, नंदादिक ध्रेणिक नृप नारी । ते तजी
पुत्र मंत्री जित शत्रु, मल्य तणा पट जाण
सुमित्र ॥ २३ ॥ खंदग सेठ सुदर्शन दाख,
दान दीयो बहु काय सुभाप । करकण्डु
द्रुमुह नमि निगई, सिंह महाबल संजय सुगई
॥ २४ ॥ चित्र संभूति कपिल हरकेशी, गरद-
भाल केसी परदेशी । इपुकागी नृगसुत छहुं
साथी, समुद्रपाल रही नेमि जनाथी ॥ २५ ॥
चत्री राजकुमार ऐवता, आठ कुनार महा जम-

रीभी तुं नाहीं, कृत घन लख उपगारे री
काया ॥ अ० ॥ ५ ॥ जीव सुनो यह रीत
अनादी, काहे कहत वार वारे । में न चलुंगी
तो संग तेरे, पाप पुन्य दोष लारे री काया
॥ अ० ॥ ६ ॥ जिनवर नाम सार भज आत्म,
काया भ्रम संसारे । सुगुरु वचन परतीत
धरत शुभ, आनन्द भयै हैं हमारे री काया
॥ अ० ॥ ७ ॥

॥ इति काया स्वाध्याय सिन्धाय समाप्तम् ॥



चौरासी लाख पूरव आउ । अतिसे जिणजीरा
 चोतीस ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जगन साधु जी धारे
 सो कोड़ी, दश लाख जगन कवल ग्यानी । बांणी
 रा गुण कछा पैतीसो ॥ श्री० ॥ ७ ॥ तिथंकर
 एकण मेरु लारे, ज्यांरे साध साधवीया रो
 परीवारो । ए तो मुक्ति जासी आटु कर्म पीसो
 ॥ श्री० ॥ ८ ॥ बेहरमान बीसउ जाणी, ज्यांरो
 भजन करो उत्तम प्राणी । ज्यांरे पूरे मन
 रो जगीसो ॥ श्री० ॥ ९ ॥ शहर मेडतो शुभ
 ठामो, रिपी जैमलजी किया धारा गुण ग्रामो
 ॥ श्री० ॥ १० ॥

॥ इति बीस बेहरमान स्तवन समाप्तम् ॥



अ

अआके, अजर अमर अविनाशी आर्विकारी ।
 सिद्ध अरूपी अखंड मंड, अरागी अरोगी है ॥
 अवेद अवेदी अविद्येदी अकपाई ज्ञानी,
 अलख अखय गुणि, असोगी अभोगी है ।
 अकल अमल सुध, अचल अगम्य गम्य,
 अलेसी अरागी जोगी, अजोणी अजोगी है ।
 ऋषि लालचन्द कहे, केवल दंशण लहे,
 सिद्ध है अनंत ज्ञानी अनंत उष्योगी है ॥ ६ ॥

आ

आ आके. आछी करचां आछी होवें,
 आछी विन युंही खोवे. आछी करचा करणी
 तो गरभ न आवेंगो । आछी दया आछो दान,
 आछी सत्य आछो ज्ञान. आछो शील आछो
 ध्यान, आछी जम्या लावेंगो । आछो विनो
 आछो क्यास, आछो पोसो आछो वास, आछी
 वाणी आछो भ्यास. मुगत्यांमे पावेंगो । ऋषि

पूज्य ऋषि लालचन्दजी कृत वावनी । ११२

सालिभद्र सुख लिया, श्रं एककी गोदमें रहि
लालचन्द कहे एही ते आनंद लहे. अन्त
मुक्ति गया, हरखकी होदमें ॥ ६ ॥

उ

उउके, उदम करत जीव, पापमांछें रुद्ध.
उदम करीने पापी, पेटका मग्न है । उदम
करत जीव, छत्तिसुंही पाण पाप. मांछें रुद्ध
चौरासी में फिरके मग्न है । उदम करीने पाप.
नरक निगोद गया, पापके उदम मग्न. चौरासी
फिरत है । ऋषि लालचन्द कहे. ज्ञान मुक्त
लहे. धरम उदम कीयां. मग्न निरत है । ७ ॥

उ

उउके. उदै जदजांन रुद्ध. या
रहसी शर्म. उदै आयां शर्म रुद्ध
पाया है । उदै आयां शर्म रुद्ध. या
देवादिक. रावण महाराज म रुद्ध
है । उदै आवे पुन्य पाप. या रुद्ध

ऐ

ऐऐके, एही जीव ज्ञान विना, एही जीव ध्यान विना, एही जीव दांन विना, जनम गमावै है । एही जीव तप विना, एही जीव त्याग विना, एही जीव भाग विना, जग में भमावे है । एही जीव आंधो ऊवो, एही जीव बांदो हुवो. एहीजी मांदो हुवो, धर्म न ध्यावे है । ऋपिलाल चंद कहै. एही जीव दुःख सहै, पापकर्म करयां पार. गत नहीं पावे है ॥ १७ ॥

ओ

ऊंचकुल आयां तेने. ऊंचो काम काई करयो. ऊंचकुल ऊंचीजात. पावे दया धर्म थी । ऊंचोमन राखे संत. साधनको देख देख, ऊंचो वंश पायां नहीं. छूट आटुं कर्म थी । ऊंचो नीचो होय पुन्य. पाप सेती एही जीव, जमा दया दान लाहो. लीजै लज्या समथी । रिपिलालचंद कहै. ऊंचीगत नद लहे. दया धर्म पाले अने. छूटै मिथ्या समथी ॥ १८ ॥

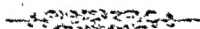
(सोरठा)

❀ श्री जय जिनेंद्राय नमः ❀



संग्रह कीनो सार, श्री गुरुदेव प्रसाद से ।
 उतरे भवजल पार, याकों जो निशदिन पढ़े ।१।
 श्रीजैन धर्मको सार, संग्रह सुश्रावक कियो ।
 विक्रमपुर मभार, ज्ञान तणो अनंद लियो ।२।
 ये पुस्तक सुखदाय, गोविन्दगम अपण कीवी ।
 प्रभु चरण चित्तलाय, शुद्ध मनसे पुस्तक पढ़ो ।३।
 पढ़िए चित्त लगाय, जतना पुस्तक राखिये ।
 विघ्न कांति मिटजाय, सुख सम्पत्त सबही मिले ।४।
 धर्म तणो यह पंथ, ज्ञान दयाको मूल है ।
 पूर्ण भयो यह ग्रन्थ, जैन धर्म प्रसादसे ।५।

चिठी पत्री नीचे लिखे पतेसे करें—



और अपना ठिकाना (पता) नागरी
(हिन्दी) अंग्रेजी दोनों साफ २ अक्षरों
में पूरा लिखें, ग्रामका नाम पोस्ट ऑफिस
तथा जिला अहमरेजीमें साफ २ लिखें और
डाक खर्चके लिये टिकट चिट्ठीके साथ
भेजें, जो किताब हमारे यहां स्टॉकमें
तैयार होगा तो भेजा जायगा अगर किसी
को पहला पूछना हो तो जवाबी पोस्टकार्ड
लिखकर पूछ लेवे ।

पुस्तक मिलनेका पता—

अगरचन्द भैरोंदान सेठिया,

“श्री जैन ग्रन्थालय”

मुहल्ला—मरोटीवांका

वीकानेर (राजपूताना)

